की पहल तो हुई चहल-पहल

- नीरज पन्त

तीनों कोणों की समान भूमिका ही शिक्षा रुपी त्रिभुज को सम्पूर्ण करती है। यदि एक भी कोण को नजरंदाज किया जाये तो शिक्षा को सम्पूर्णता में देखना संभव नही हो पाता।

रोज की भांति हम सब मशगूल थे अपनी चर्चाओं में तभी सतीश आये। उन्होंने कहा, "सर आज तो चमत्कार हो गया। अमर सिंह जी ने बच्चों के जूते खरीदने के लिए 1500 रुपए नगद जमा किये।" दरअसल पूरी कथा यह थी कि निःशुल्क गणवेश वितरण के साथ श्री सतीश काण्डपाल ने सभी अध्ययनरत बच्चों को एक जोड़ी ट्रैक सूट व गर्म टोपी अपनी ओर से उपहार स्वरूप दी थी। इस अवसर पर हुई अभिभावकों की बैठक में उन्होंने अपील की कि बच्चों के लिए जूते व मोजे भी खरीदे जाएं ताकि यूनिफॉर्म भी पूरी हो और ठण्ड से भी बचा जा सके। इस अपील का असर था कि एक अभिभावक ने स्वतः ही आगे आकर स्कूल के बच्चों के लिए जूते खरीदने हेतु 1500 रुपए प्रदान किए। इस घटना से सतीश काफी खुश थे, और मैं भी अत्यन्त प्रसन्न हुआ, बात ही प्रसन्नता की थी।

सतीश से आपका परिचय कराता हूं, विकास खण्ड गरुड़ के संकुल भगरतोला में एक विद्यालय है–राजकीय प्राथमिक विद्यालय नवीन डुमलोट। इस विद्यालय में श्री सतीश चन्द्र काण्डपाल शिक्षक की भूमिका में थे और मैं उन दिनों संकुल संसाधन केन्द्र भगरतोला में समन्वयक की भूमिका में था। उन दिनों स्कूल से आकर भगरतोला संकुल के अधिकांश शिक्षक एक साथ बैठकर दिन भर की गतिविधियों को परस्पर साझा करते थे। शाम के समय टीट बाजार में अनौपचारिक बैठकें नियमित हुआ करती थीं। इन बैठकों में लंबी–लंबी चर्चा–परिचर्चा और मंथन होता था। स्कूल की समस्याओं के अलावा व्यक्तिगत दिक्कतों पर भी बातें होती थी। ज्यादा गंभीरता छाने पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय भिटारकोट के शिक्षक श्री नीरज कुमार पंत विषय बदल कर ठहाकों का सिलसिला शुरू कर देते थे। बहुत सार्थक अनौपचारिक सत्र थे वे।

अमर सिंह जी तब राजकीय प्राथमिक विद्यालय नवीन डुमलोट की विद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष थे। उनके द्वारा की गई इस पहल से हम लोग बहुत खुश थे। सरकारी विद्यालय के प्रति समुदाय की उदासीनता के माहौल में यह कदम स्वागत योग्य तो था ही, उम्मीद जगाने वाला भी था। इस प्रसंग के कुछ दिनों बाद संकुल स्तरीय विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के उदघाटन सत्र में हम शिक्षक साथियों ने मिलकर क्षेत्रीय विधायक के हाथों अमर सिंह जी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित कराया। इस प्रशिक्षण में उपस्थित लगभग 150 एसएमसी सदस्य अमर सिंह जी से बहुत प्रभावित हुए और प्रेरित भी।

इस प्रशिक्षण के कुछ माह पश्चात राजकीय प्राथमिक विद्यालय तुनियातोक–गरूड़ में विद्यालय प्रबंधन समिति की एक बैठक में अभिभावकों ने तय किया कि विद्यालय में बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर, बेंच और टेबल बनायेंगे। इस बैठक के दस दिन बाद ही स्कूल में चीड़ के 18 तख्त जमा हुए। एक अभिभावक जो कि लकड़ी के मिस्त्री का काम करते थे, ने सुन्दर फर्नीचर का निर्माण बिना कोई शुल्क लिए ही किया।

तुनियातोक का प्राथमिक विद्यालय ऐसे स्थान पर स्थित है जहां जाड़े के मौसम में धूप नहीं आती। उन दिनों वहां बच्चों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील शिक्षक पंकज पाण्डे शिक्षण कार्य कर रहे थे। ठण्ड के मौसम में बच्चों को चटाई पर कंपकंपाते हुए उनसे देखा नहीं गया। बच्चों के प्रति उनकी यह चिन्ता विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में जुबां पर निकल आई। उनकी इसी पहल से विद्यालय के बच्चे चटाई से फर्नीचर तक पहुंचे।

प्राथमिक विद्यालय बन्तोली में युवा शिक्षक दलीप भाकुनी कुछ माह व्यवस्था के तहत कार्यरत रहे। अल्प समय में उन्होंने स्कूल में समुदाय के सहयोग से बहुत ही आकर्षक फुलवारी व बगीचे का निर्माण किया। हम सभी जानते हैं कि कोई भी बाल शोध समुदाय के सहयोग के बगैर न तो सम्पन्न हो सकता है और न ही सफल। श्री दलीप भाकुनी ने प्राथमिक विद्यालय लछियागैर में उस गांव की पारम्परिक विधा रिंगाल उद्योग पर बाल शोध करा कर बहुत ही सराहनीय कार्य किया।

भगरतोला संकुल में लगभग छह वर्ष समन्वयक की भूमिका में रहते हुए सभी शिक्षक साथियों से जो प्रेरणा मिली, उसी के परिणाम स्वरूप मैं आज अपने विद्यालय में समुदाय का सहयोग प्राप्त कर पा रहा हूं। इस दरम्यान मुझे जो महत्वपूर्ण बात समझ में आई वह थी– पहल करना जरूरी है और महत्वपूर्ण भी। यहीं से मुझे दिशा भी मिली। शिक्षा में समुदाय की भूमिका पर मेरा नजरिया कुछ इस तरह से है– ऐसा कहा जाता है कि शिक्षा त्रिकोणीय प्रक्रिया है। पहला कोण है बच्चा, दूसरा शिक्षक और तीसरा समुदाय अथवा अभिभावक।

हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था शिक्षक एवं बच्चे (विद्यार्थी) के इर्द–गिर्द घूमती नजर आती है। समाज का भी यही मानना है कि शिक्षा का उत्तरदायित्व स्कूल व शिक्षक का है। किसी भी बच्चे की बोली, भाषा, और व्यवहार उसके परिवार और समुदाय के द्वारा ही तय होते हैं। परिवार और समाज से ही वह कई प्रकार की मान्यताएं, धारणाएं गढ़ता है, किन्तु विद्यालय में नामांकित होते ही बच्चे को सिखाने, उसकी समझ बढ़ाने की सारी जिम्मेदारी समाज द्वारा स्कूल और शिक्षक पर थोप दी जाती है। यह थोप देने की मानसिकता हमारे समाज में गहरे पैठ कर गयी है लेकिन वास्तविकता यह है कि बच्चा और शिक्षक भी अपनी समझ समाज के अनुरूप ही बना पाता है।

वर्तमान में सरकारी शिक्षा के प्रति समुदाय और समाज की उदासीनता दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। हालांकि

सरकार, शिक्षा विभाग या सर्वशिक्षा अभियान द्वारा समुदाय को स्कूल से जोड़ने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को प्रशिक्षित किया जाता है और विभिन्न प्रकार की बैठकें आयोजित की जाती हैं। लेकिन इन सभी योजनाओं के क्रियान्वयन का कोई प्रभावी तरीका अमल में नहीं लाया जाता, जिस कारण समुदाय शिक्षा के प्रति जागरूक व संवेदनशील नहीं हो पाया है। हां, यह जरूर है कि इस प्रकार के आयोजनों से समुदाय में शिक्षा के महत्व पर समझ बढ़ी है। परन्तु शिक्षा में समुदाय की भूमिका तय नहीं हो पाई है या समुदाय अपनी भूमिका को स्पष्ट रूप से देख नहीं पा रहा है।

1 जुलाई 2015 को राजकीय जूनियर हाईस्कूल रौल्याना, गरूड़ (बागेश्वर) में शिक्षक के रूप में मैंने अपनी नयी भूमिका की शुरुआत की। बच्चों के साथ काम करते हुए मुझे महसूस हुआ कि स्कूल के प्रति अभिभावकों का रवैया यहां भी उदासीन है। इस रवैये को बदलने के लिए तथा समुदाय को शिक्षा के प्रति परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जोड़ने के लिए बाल शोध का सहारा लिया। मुझे लगता है कि बाल शोध में अभिभावक की भूमिका अनिवार्य होती है। बिना समुदाय के सहयोग से बाल शोध पूरा हो ही नहीं सकता। बच्चों के साथ बैठकर बाल शोध के लिए चार समूह बनाये। पहले समूह ने अपने लिए विषय चुना 'हमारे गांव का इतिहास', दूसरे समूह ने 'गांव के रीति–रिवाज', तीसरे समूह ने 'गांव के पेयजल स्रोत' और चौथे समूह ने चुना 'स्थानीय औषधीय पौधे।' इन विषयों पर आधारित बाल शोध को संपन्न कराने में समुदाय का सहयोग सभी समूहों को मिला।

तत्पश्चात विद्यालय में बाल शोध मेला "कौतिक" का

आयोजन किया गया। कौतिक में बच्चों ने समूहवार अपने द्वारा किये गये बाल शोध का प्रस्तुतिकरण किया। प्रथम समूह ने गांव के इतिहास के सम्बन्ध में लिखा था, ''गढ़वाल से आकर कुछ लोग मजकोट नामक गांव में बसे मजकोट के श्री धर्म गिरी ने तीन परिवारों को रौल्याना के समतल भू–भाग में बसाया। इन तीन परिवारों में से श्री गोपाल गिरी का परिवार यहीं का होकर रह गया। उनके वंशजों ने ही इस गांव को बसाया और विस्तार दिया। गांव के नाम को लेकर भी दो कथाएं प्रचलित हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह स्थान रौलियों (प्राकृतिक नालों) से घिरा था, इसीलिए इसका नाम रौल्याना पड़ा। जबकि कई लोग यह मानते हैं कि यहां राड़ (सरसों) बहुतायत में पैदा होता था, इस वजह से गांव का नाम रयाण पड़ा। स्थानीय भाषा–बोली में अभी भी गांव को रयाण ही कहा जाता है। "दूसरे समूह ने गांव के रीति–रिवाजों का जिक्र किया था, इस जिक्र में रोचकता के साथ ही बाल समझ के अनुरूप चिंता भी दृष्टिगोचर हो रही थी। जैसे –"हमारे गांव में त्यौहारों में फूलखाज भी बनाया जाता है और बड़े चाव से खाया जाता है। शादी विवाह में लोग उल्लास से मिल–जुलकर नाचते–गाते हैं, लेकिन कुछ लोग नशा करके लड़ाई–झगडा भी करते हैं, जिससे माहौल खराब होता हैं।''

तीसरे समूह ने गांव के पेयजल स्रोतों के बारे लिखा था। "पहले सभी लोग धारे और नौले पर पानी भरने आते थे। हम बच्चे भी पानी भरने के साथ वहां दाणी, अड्डू खेलते थे, लेकिन अब अधिकतर लोग नल से ही पानी भरने लगे हैं, कुछ लोगों ने अपने घर में ही नल लगा लिए हैं.... बहुत कम लोग अब धारे और नौले में आते हैं"। इसी तरह चौथे समूह ने स्थानीय औषधीय पौधों के बारे में गांव के बचगिरी, पदमा देवी आदि बुजुर्गों द्वारा दी गयी जानकारी को साझा किया। चार समूहों के अतिरिक्त कक्षा 8 के पंकज ने कुमाउंनी मांगल गीत पर गांव की महिलाओं के सहयोग से शोध किया। पंकज ने मांगल गीतों को चार्ट पर लिखकर, गाकर और सन्दर्भ सहित उनका भावार्थ भी प्रस्तुत किया। कौतिक में समुदाय के सभी अभिभावकों और जनप्रतिनिधियों ने भागीदारी की। इस कौतिक से समुदाय को अपने संचित ज्ञान और अनुभवों की महत्ता का अहसास हुआ। स्थानीय विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष और जनप्रतिनिधियों के साथ ही शिक्षा अधिकारियों की उपस्थिति ने समुदाय को स्कूल से जोड़ने की सुखद शुरुआत भी की। इस बाल शोध मेले के बाद समुदाय ने स्कूल में विभिन्न संसाधनों को विकसित करने में भूमिका निभाई।

विद्यालय में बच्चों के लिए खेल मैदान का अभाव था। प्रबंधन समिति की बैठक में इस मुद्दे को रखा प्रबंधन समिति के प्रस्ताव पर ग्राम प्रधान ने मनरेगा के अंतर्गत पंचायत द्वारा फील्ड का निर्माण करवाया। ग्राम पंचायत की खुली बैठक में ग्राम प्रधान श्री मदन गिरी ने स्कूल में बालिका शौचालय का प्रस्ताव पारित करवाया। चौदहवें वित्त के बजट से बालिका शौचालय का निर्माण हुआ। विधायक निधि और क्षेत्र पंचायत निधि से विद्यालय तक सीमेंट का पक्का रास्ता बनाया गया। गांव की महिलाएं विद्यालय में नियमित स्वच्छता अभियान संचालित करती हैं। प्रतिमाह होने वाली बैठक में अभिभावक सक्रियता से प्रतिभाग करते हैं और बच्चों के शिक्षण से सम्बंधित कार्यों में भाग लेते हैं।

(लेखक राजकीय जूनियर हाईस्कूल रौल्याना, गरुड़, बागेश्वर, में अध्यापक के पद पर हैं)

उम्मीद जगाते शिक्षक का नया अंक